गौतम बुद्ध महाविद्यालय

सम्बद्ध-सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पचपेड़वा, सांगठ, संतकबीर नगर (उ.प्र.)

(शिक्षा संकाय)

बी.एड द्विवर्षीय पाठ्यक्रम (प्रथम वर्ष)

पाठ्य पर अध्ययन एवं चिन्तन

सत्र : 20.25.-20.26.

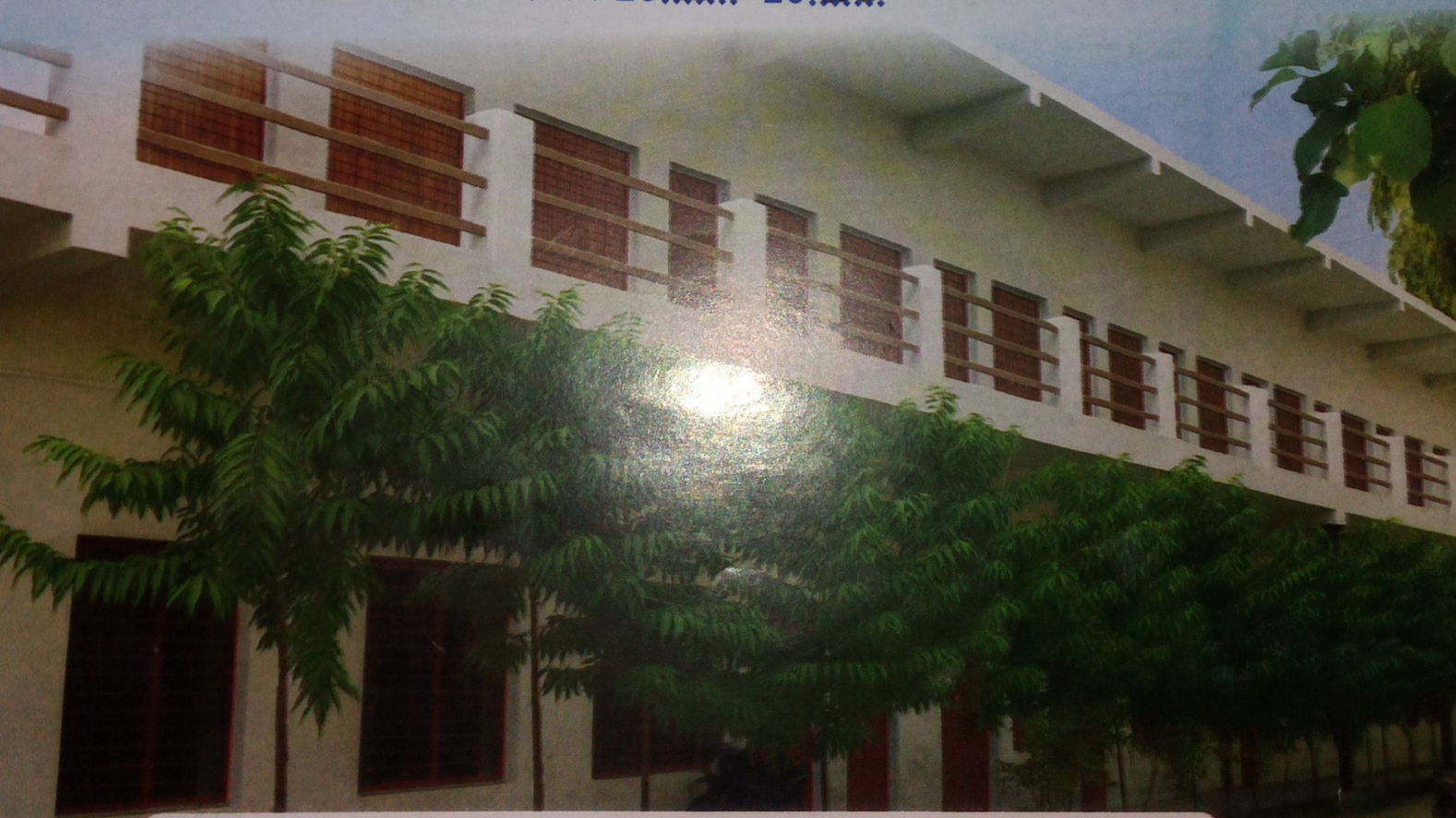

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका का नाम सुन्दरी

शिक्षण विषय पाठ्य पर अध्ययन एवं चिन्तन

महाविद्यालय अनुक्रमांक

विश्वविद्यालय द्वारा आवंटित अनुक्रमांक

ज्ञान- योग : स्वामी विवेकानन्द ;

रामकृष्ण मठ कोलकाता ।

ज्ञान-योग : मुख्य सिद्धांत (Swami Vivekananda)

1. ज्ञान-योग का अर्थ :-

- यह ज्ञान-योग वह मार्ग है जिसमें तर्क, विवेक और आत्मचिंतन के द्वारा सत्य (ब्रह्म) की अनुभूति की जाती है।
- इसका लक्ष्य है; आत्मा और ब्रह्म की एकता का बोध।

2. आत्मा का स्वरूप :-

- आत्मा नित्य, शुद्ध, मुक्त है।
- आत्मा न जन्म लेती है, न मरती है।
- शरीर और मन परिवर्तनशील है, आत्मा नहीं।

"तुम शरीर नहीं हो, तुम आत्मा हो।" — विवेकानंद

3. अज्ञान ही बंधन का कारण :-

- मनुष्य का दुःख और बंधन अविद्या (अज्ञान) से उत्पन्न होता है।
- अज्ञान के कारण हम अपने को शरीर-मन समझ लेते हैं।
- ज्ञान ही इस अज्ञान को नष्ट करता है।

4. ब्रह्म और जगत :-

- ब्रह्म एक, अद्वितीय और निराकार है।
- यह सम्पूर्ण जगत उसी ब्रह्म की अभिव्यक्ति है।
- जगत मिथ्या नहीं, बल्कि सापेक्ष सत्य है।

5. माया का सिद्धांत :-

- माया ब्रह्म की शक्ति है। जो एक को अनेक रूप में दिखाती है।
- माया अज्ञान नहीं, बल्कि अनुभव की सीमित दृष्टि है।
- ज्ञान से माया का प्रभाव होता है।

6. "नेति-नेति" का सिद्धांत :-

- सत्य की खोज में यह कहा जाता है— "यह नहीं, यह नहीं"।
- जो नाशवान है, वह आत्मा नहीं हो सकता।
- इस प्रक्रिया से शुद्ध आत्मज्ञान प्राप्त होता है।

7. विवेक और वैराग्य :-

- विवेक ; नित्य-अनित्य का भेद जानना।
- वैराग्य ; इंद्रिय विषयों से आसक्ति का त्याग।
- ज्ञान-योग के लिए दोनों अनिवार्य है।

8. स्वतंत्रता ही जीवन का लक्ष्य :—

- मनुष्य का अंतिम लक्ष्य ही पूर्ण स्वतंत्रता (मोक्ष)।
- यह स्वतंत्रता बाहरी नहीं, आंतरिक होती है।
- ज्ञान से ही यह स्वतंत्रता मिलती है।

9. अन्य योगों से संबंध :—

- विवेकानंद के अनुसार,
- कर्म-योग मन को शुद्ध करता है।
- भक्ति-योग हृदय को निर्मल बनाता है।
- राज-योग मन को नियंत्रित करता है।

10. मानवतावाद और अद्वैत दृष्टि :—

- सभी प्राणी एक ही आत्मा के रूप हैं।
- इसलिए सेवा ही ईश्वर-पूजा है।
- किसी से घृणा करना स्वयं से घृणा करना है।

स्वामी विवेकानंद

1. ज्ञान-योग वह मार्ग है जिसमें से विवेक और तर्क के माध्यम से परम सत्य की अनुभूति की जाती है।
2. इसका उद्देश्य आत्मा और ब्रह्म की एकता का बोध कराना है।
3. आत्मा नित्य, शुद्ध, बुद्ध और मुक्त है।
4. आत्मा का न जन्म होता है और न ही मृत्यु।
5. मनुष्य का बंधन अज्ञान (अविद्या) के कारण होता है।
6. ज्ञान ही वह साधन है जो अज्ञान को नष्ट करता है।
7. ज्ञान ब्रह्म एक निराकार और सर्वव्यापक है।
8. संपूर्ण जगत ब्रह्म की ही अभिव्यक्ति है।
9. माया वह शक्ति है जो एक को अनेक के रूप में प्रकट करती है।
10. ज्ञान से माया का प्रभाव समाप्त हो जाता है।
11. "नेति-नेति" के माध्यम से सत्य की खोज की जाती है।
12. विवेक का अर्थ नित्य और अनित्य का भेद जानना है।

13. वैराग्य का अर्थ सांसारिक अशक्तियों का त्याग है।
14. ज्ञान-योग में स्वतंत्रता (मोक्ष) को जीवन का अंतिम लक्ष्य माना जाता है।
15. सभी प्राणी एक ही आत्मा के विभिन्न रूप हैं।
16. इसलिए मानव-सेवा को ईश्वर-सेवा कहा गया है।
17. कर्म-योग, भक्ति-योग और राज-योग ज्ञान-योग के सहायक हैं।
18. ज्ञान-योग अद्वैत वेदांत पर आधारित है।
19. यह योग आत्मचिंतन और आत्मानुभूति पर बल देता है।
20. ज्ञान-योग मनुष्य को भय, अज्ञान और दुःख से मुक्त करता है।

निष्कर्ष :—

ज्ञान-योग स्वामी विवेकानंद के दर्शन का प्रमुख मार्ग है, जो आत्मज्ञान के द्वारा मुक्ति की प्राप्ति कराता है। इसमें विवेक, वैराग्य और आत्मचिंतन को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

आनंद मठ : बंकिम चन्द्र चट्टर्जी;

राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

आनन्द मठ :—

आनन्द मठ के रचनाकार बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ।

आनन्द मठ बाग्ला देश का एक उपन्यास है जिसकी रचना बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने सन 1882 में की थी। इस कृति का भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और स्वतन्त्रता से क्रान्तिकारियों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा।

भारत का राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम इसी उपन्यास से लिया गया है। छपते ही यह पुस्तक अपने कथानक के चलते पहले बंगाल और कालान्तर में समूचे भारतीय साहित्य व समाज पर छा गई।

आनन्दमठ राजनीतिक उपन्यास है। इस उपन्यास में उत्तर बंगाल में 1773 के सन्यासी विद्रोह का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में देशभक्ति की भावना है। अंग्रेजो ने इस ग्रन्थ पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। भारत के स्वतन्त्र होने के बाद 1947 में इससे प्रतिबन्ध हटाया गया। आनन्दमठ के तब से अब तक न जाने कितनी भाषाओं में कितने संस्करण छप चुके हैं।

चूंकि यह उपन्यास कॉपीराइट से मुक्त हो चुका है, इसलिए लगभग हर बड़े प्रकाशन ने इसे छापा है।

उपन्यास की कथा सन् 1770 तक के बंगाल के भीषण अकाल तथा सन्यासी विद्रोह पर आधारित है। इसमें वर्ष 1770 से 1774 तक के बंगाल का चित्र खींचा गया है। कथानक की दृष्टि से यह उपन्यास या ऐतिहासिक उपन्यास के बढ़कर है। महर्षि बंकिम ने अप्रशिक्षित किन्तु अनुशासित सन्यासी सैनिकों की कल्पना की है जो अनुभवी ब्रिटिश सैनिकों से संघर्ष करते हैं और उन्हें पराजित करते हैं।

बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय (चटर्जी) द्वारा रचित 'आनन्दमठ' (Anandamath) बंगाली साहित्य का एक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी उपन्यास है, जो पहली बार 1882 में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास सन्यासी विद्रोह (1770-1777) तक जो बंगाल में ब्रिटिश में शासन तक और अत्याचार के विरुद्ध लड़ा गया था।

राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।

- राजकमल प्रकाशन की ओर से उपलब्ध यह हिन्दी संस्करण पाठकों को ऐतिहासिक संघर्ष का एक साहित्यिक रूप प्रदान करता है।
- पुस्तक में 1770 ई० के अकाल के दौरान राष्ट्र - विप्लब (क्रांति) का सजीव चित्रण है, जिसे आज के सन्दर्भ में प्रासंगिक माना जाता है।
- आधार - 18 वीं सदी के उत्तरार्ध में बंगाल में सन्यासी विद्रोह।
- महत्व :- यह उपन्यास भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान क्रांतिकारियो के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बना।
- वंदे मातरम् :- भारत का राष्ट्रीय गीत "वंदे मातरम्" इसी उपन्यास का एक हिस्सा है, जो मूल रूप से बंकिम चन्द्र ने ही लिखा था।
- विषय :- यह उपन्यास देशभक्ति, त्याग और देश की सेवा के लिए व्यक्तिगत मोह- माया को छोड़ने की भावना को दर्शाता है।
- कहानी :- कहानी मुख्य रूप से जमींदार जो अकाल और ब्रिटिश उत्पीड़न से परेशान होकर संन्यासी विद्रोहियों ("संतान") में शामिल हो जाते हैं।

कथा :-

आनन्दमठ के प्रमुख खण्ड में कथा 'बंगाल की दुर्भिक्ष' काल से प्रारम्भ होती है जब लोग दाने-दाने के लिए तरस रहें थें।
इस गाँव दौड़कर यहाँ-वहाँ भाग रहें थें-
एक तो खाने के लाले थे दूसरे किसान के पास खेती मे अन्न उत्पन्न न होने पर भी अंग्रेजों द्वारा लगान का दबाव उन्हें पीड़ित कर रहा था।
कथा पच पदचिन्ह गाँव की है।
महेन्द्र और कल्याणी अपने अबोध शिशु को लेकर गाँव से दूर जाना चाहते हैं।
यहाँ लूट-पाट-डकैती आदि की घटनाएँ हैं।
डकैतो ने कल्याणी को पकड़ लिया था पर वह जान बचाती दूर जंगल में भटक जाती है। महेन्द्र को सिपाही पकड़ लेते हैं- जहाँ हाथापाई होती है और भावानन्द नामक संन्यासी उसकी रक्षा करता है।
भावानन्द आत्मरक्षा में अंग्रेज साहब को मार देता है।
लूट का सामान व्यवस्था में लगाता है।
वहाँ दूसरा संन्यासी जीवानन्द पहुँचता है।
भावानन्द और जीवानन्द दोनों संन्यासी, प्रधान सत्यानन्द के शिष्य हैं- जो 'आनन्दमठ' में रहकर देश सेवा के लिए कर्म करते हैं।

महेन्द्र भावानन्द का परिचय जानना चाहता है, क्योंकि यदि भवानन्द आत्मरक्षा भवानंद न मिलता तो उसकी जान जा सकती थी।
भवानंद ने जवाब दिया - मेरा परिचय जानकर क्या करोगे? महेन्द्र ने कहाँ - मैं जानना चाहता हूँ आज आपने मेरा बहुत उपकार किया है। महेन्द्र समझ नहीं पाता कि संन्यासी डकैती की तरह भी हो सकता है।
सहसा बदल गयी थी।
वह अब धीर स्थिर प्रकृति का संन्यासी नहीं लग रहा था। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट तैर रही थी।
मौन भंग करने के लिए वह व्यग्र हो रहा था, परन्तु महेन्द्र गंभीर था।
तब भवानंद ने गीत गाना शुरु किया।

वन्दे मातरम्! सुजलां सुफलां
मलयज शीतलां शस्यश्यामलां मातरम्।